महिषासुर मर्दिनि स्तोत्रं

अयि गिरि नन्दिनि, नन्दित मेदिनि, विश्व विनोदिनि, नन्दिनुते ॥
गिरि वर विन्ध्य शिरोधिनि वासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ॥
भगवति हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरिकुटुंबिनि भूरिकृते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 1

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते ॥
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिशमोषिणि घोषरते ॥
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 2

अयि जगदंब मदंब कदंबवनप्रियवासिनि हासरते ॥
शिखरिशिरोमणि तुङ्गहिमालय श्रिङ्गनिजालय मध्यगते ॥
मधुमधुरे मधुकैटभगन्जिनि कैतभभन्जिनि रासरते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 3

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते ॥
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते ॥
निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपातितमुण्ड भटाधिपते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 4

अयि रणदुर्मदशत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते ॥
चतुरविचारधुरीणमहाशिव दूतक्रित प्रमथाधिपते ॥
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मति दानवदूत कृतान्तमते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 5

अयि शरणागत वैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे ॥

त्रिभुवनमस्तक शूलविरोधिशिरोधिकृतामल शूलकरे ॥
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद महोमुखरीकृत तिग्मकरे ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 6

अयि निजहुंकृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते ॥
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते ॥
शिवशिवशुंभनि शुंभमहाहवतर्पित भूतपिशाचरते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 7

धनुरनुसंगरणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके ॥
कनकपिशंग प्रिशत्कनिशन्ग रसद्भटशृन्ग हताबटुके ॥
कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्बहुरंग रटद्बटुके ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 8

जय जय जप्यजये जयशब्द परस्तुतिततत्पर विश्वनुते ॥
झण झण झिंझिमिझिंकृतनूपुर षिंजितमोहित भूतपते ॥
नटित नटार्द्धनटीनटनायक नाटितनाट्यसुगानरते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 9

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहरकान्तियुते ॥
श्रित रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकरवक्रवृते ॥
सुनयनविभ्र मरभ्र मरभ्र मरभ्र मरभ्र मराधिपते॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 10

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते ॥
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक श्रिल्लिकभिल्लिक वर्ग्गवृते ॥
सित कृत फुल्लिसमुल्लसिताकृणतल्लज पल्लवसल्लळिते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 11

अविरळगण्ड गळन्मदमेदुर मत्तमतंगजराजपते ॥
त्रिभुवन भूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधिराजसुते ॥
अयि सुदतीजनलालसमानस मोहनमन्मथराजसुते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 12

कमलदळामलकोमळ कान्तिकलाकलितामल भालतले ॥
सकलविलासकलानिलयक्रम केळिचलत्कल हंसकुले ॥
अळिकुलसंकुल कुवलयमण्डल मौलिमिळद्बकुळाळिकुले ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 13

करमुरळीरव वीजित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते ॥
मिळितपुळिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जितशैलनिकुञ्जगते ॥
निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केळितले ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 14

कटितटपीतदुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे ॥
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुळसन्नख चन्द्ररुचे ॥
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुंभकुचे ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 15

विजितसहस्र करैकसहस्र करैकसहस्र करैकनुते ॥
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते ॥
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधि समाधि सुजातरते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 16

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योनुदिनं सशिवे ॥
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः सकथं न भवेत् ॥

तव पदमेव परं पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 17

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनुसिञ्चिनुते गुणरंगभुवं ॥
भजति स किम् न सचीकुचकुंभ तटीपरिरंभ सुखानुभवं ।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासिशिवं ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 18

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते ॥
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखीसुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ॥
मम तु मतं शिवनामधने भवती क्रिपया किमुत क्रियते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 19

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे ॥
अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथानुमितासितरे ॥
यदुचितमत्र भवत्युररीक्रुतादुरुताप मपाकरुते ॥
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 20